३४: सत्यता-१०: आनंद ही जीवन है |

दिनांक -११/१२/२०११

आनंद ही जीवन है | सुदूर विगत से सर्वदेश- कालीय मानवचाहे ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी हों- सभी सुख, शांति, संतोष, आनंदपूर्वक जीना चाहते हैं | प्रमुख रूप में आनंदित रहना ही वांछित रहा है | इसे पाने के लिये अनेक प्रकार का प्रयत्न हुआ है | वह दो भागों में होना पाया गया है | एक आदर्शवादी विधि दूसरा भौतिकवादी विधि | मानव का प्रयास में कमी नहीं रहा है | इन दोनों विधियों में से भौतिकवादी में प्रयोग कृत्य प्रधान रहा | आदर्शवादी विधि से अभ्यास, ध्यान, समाधि विधियाँ प्रधान रहा | इन दोनों में से जीभरकर प्रयोग हुआ, अभ्यास हुआ | आदर्शवादी विधि से रहस्यमूलक ईश्वरवाद प्रतिपादित हुआ | भौतिकवादी विधि से अस्थिरता, अनिश्चयतामूलक वस्तुवाद प्रतिपादित हुआ | इन दोनों विधियों में आदमी जात मन लगाकर प्रयोग किया | आदर्शवाद विधि से मानव का अध्ययन नहीं हुआ | रहस्य से मुक्ति नहीं मिली |

भौतिकवादी विधि से सुविधा- संग्रह का अपेक्षा बना रहा | यह सबको समान रूप से मिलने से रही | इन दोनों पराजय से पीड़ित होता हुआ मानव जात अपने बौखलाहट को विद्वता माना | शिकायत करना, शिकायत सुनना ही विद्वता माना गया है आज की स्थिति में | यही आज का प्रमुख तकाजा है, यह एक बात हुआ | दूसरा, धरती बीमार हो गयी | प्रमुख रूप में धरती बीमार होनाथोड़ा सा भी सोचने वाले मानव के सम्मुख प्रधान समस्या हो गयी | इससे निपटने की भी कुछ लोगों में प्रधान रूप से अपेक्षा है | इसका समाधान के रूप में विकल्पात्मक सोच विचार तैयार हुआ है | यही भारतीय आदर्शवाद के रूप में प्रचलित विधियों से चलता हुआ मानव सन्तान ही प्रस्ताव के रूप में प्रस्तुत किया है |

इस विडम्बना को देखने पर अर्थात एक तरफ आदर्शवाद पर समर्पित लाखों लोगों का कतार तथा भौतिकवाद में समर्पित करोड़ों- अरबों लोगों का कतार रहते हुए, अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन के रूप में विकल्प को प्रस्तुत किया है जिसका अध्ययन, आचरण विधि से भ्रम- मुक्त, अपराध-मुक्त होना सम्भव हो गया है | इसे मूल व्यक्ति पूरा जीकर देखा है | मूल व्यक्ति अपने में सामान्य मानव परिवार का सन्तान है | इन सभी बातों को परामर्श करने से यह लगता है कि दोनों प्रकार से परम्पराएँ हुई परन्तु इन दोनों प्रकार की परम्पराओं में से किसी एक में भी वर्तमान में विश्वास होने की व्यवस्था नहीं हुई | भौतिकवादी विधि सेज्यादा, कम, समर्थ, विद्वान, बेवकूफ रुपी मान्यताएं प्रचलित रहीं |

भौतिकवादी विधि में धनी, निर्धनी बना रहा | इन सभी कारणों के मूल में समझदारी प्रधान विकल्प से पता चलता है कि भौतिकवादी भी अपने को समझदार माना है, भले ही व्यापार करता हो | आदर्शवादी व्यक्ति भी अपने को सर्वोपरि ज्ञानी, विद्वान माना है | यह दोनों भाग व्यक्तिवाद, समुदायवाद से मुक्त नहीं हो पाये | यही सब कारण रहा विकल्प अनुसंधान के लिये प्रयास करना | प्रयास तो मूलतः आदर्शवाद के अनुसार "ब्रह्म सत्य जगत् मिथ्या" के आधार पर रहा | इसका आधार यही रहा कि आदर्शवादी वांगमय में उल्लिखित है कि ब्रह्मसे ही जीव जगत की उत्पत्ति हुई या जीव जगत पैदा हुआ | इसके शोध अनुसंधान में लगने से विकल्प विधि तैयार हो गया | विकल्प विधि से जीने से भ्रम-मुक्त होना, अपराध-मुक्त होना स्वाभाविक रहा | यही उपलब्धियां लोकव्यापीकरण होने की अपेक्षा में चेतना विकास मूल्य शिक्षा योजना मानव सम्मुख प्रस्तुत हो चुकी है |

इसे कुछ विद्वान लोग अध्ययन कर रहे हैं| समझने की सम्भावनाएं बढती जा रही हैं| दूसरी भाषा में समझदार लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है| इन सम्भावनाओं को ध्यान में लाने पर लगता है कि शिक्षा विधि से लोकव्यापीकरण होना सम्भव है|

मानव जात अपराध-मुक्त होने की स्थिति में यह अवश्य देखने को मिलेगा कि धरती अपने बचा हुआ ताकत से कितना सुधर पायेगा| इसका सामान्य सम्भावना ऐसा देखने को मिलता है कि मानव कहीं भी धरती पर चलता है तो पगडन्डी बन जाता है अर्थात चला हुआ पर रास्ता बन जाता है| उस पर जबचलना बंद कर देता है तो घास पुनः उग जाता है| इसे देखने पर धरती पर चलती आई अपराध कृत्यों से मुक्त होने पर धरती अपनी ताकत से सुधरने में कितना समय लगेगा, यह देखने को मिलेगा| मानव में यह संतुष्टि मिलेगी अपराध-मुक्त होने पर|

अभी वर्तमान में कितने भी प्रकार का अपराध करने वालों से बात करने पर पता लगता है- अपराध क्यों करते हो पूछने पर उसका सामान्य उत्तर हैहमारा मजबूरी है| मजबूरी के आधार पर शिक्षा होती नहीं| शिक्षा होती है भय,प्रलोभन के आधार पर| इसे हर देश काल में देखा जा सकता है| मजबूरियां घटनाओं का परिणाम ही हैं| इसे हर व्यक्ति परीक्षण कर सकता है| इन सभी बातों को ध्यान में लाने पर यह पता लगता है कि केवल मानव ही समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज प्रमाण सहित जीने वाला है तथा नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्यपूर्वक जीने वाला है| साथ में स्वधन, स्वनारी/पुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार पूर्वक जीने वाला भी है| ऐसा जीना ही अपराध मुक्त, भ्रम-मुक्त विधि से जीना है | यही जीवन में आनंद है|

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याणहो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत